ब्रह्मोस से लखनऊ ने पाई आत्मनिर्भरता की उड़ान

ब्रह्मोस के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ • जागरण आर्काइव

निशांत यादव • जागरण

लखनऊ: आपरेशन सिन्दूर में पाकिस्तान के नूर खान एयरबेस को तबाह करने वाली ब्रह्मोस मिसाइल की मारक क्षमता से पूरा विश्व परिचित हो गया है। आपरेशन सिन्दूर के बाद से ही कई देश भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने के लिए कतार में हैं। इस घातक मिसाइल का उत्पादन लखनऊ में शुरू भी हो गया है। उद्घाटन के केवल पांच महीने में ही ब्रह्मोस मिसाइल की पहली खेप तैयार कर उसे 18 अक्टूबर 2025 को रक्षा सेनाओं को सौंप दिया गया है। अब जल्द ही नौसेना और वायुसेना के लिए इस्तेमाल होने वाली सबसे आधुनिक और मारक क्षमता वाली ब्रह्मोस-एनजी मिसाइल का उत्पादन भी शुरू करने की तैयारी है। इस यूनिट से हर साल 100 मिसाइल तैयार होंगी। इसी तरह रक्षा मंत्रालय की एक टेस्टिंग लैब और पीटीसी इंडस्ट्रीज डिफेंस सेक्टर को सशक्त बना रही हैं।

लखनऊ की ब्रह्मोस उत्पादन यूनिट में भी 100 इंजीनियरों को तैनात किया गया है और आगे यह संख्या बढ़कर 400 तक पहुंचेगी। इस सेंटर से रक्षा उपकरणों की आपूर्ति करने वाली कई इंडस्ट्रीज भी जुड़ेंगी। अभी इस उत्पादन सेंटर से 200 कंपनियां सीधे जुड़ी हुई हैं। ब्रह्मोस मिसाइल का निर्यात इंडोनेशिया, वियतनाम, फिलिपींस, अफ्रीका जैसे कई देशों को किया जाएगा। फिलिपींस से 375 मिलियन डालर का आर्डर मिल भी चुका है। लखनऊ में ब्रह्मोस की प्रोडक्शन यूनिट को तैयार करने में ब्रह्मोस एयरोस्पेस के तत्कालीन एमडी व सीईओ डा. सुधीर मिश्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डा. सुधीर के मुताबिक इस मिसाइल की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए एक और उत्पादन सेंटर बनाने की योजना बनी थी। प्रधानमंत्री मोदी ने तमिलनाडु के साथ यूपी में डिफेंस कारिडोर बनाने की घोषणा 2018 में की थी। ऐसे में लखनऊ को इस यूनिट की स्थापना के लिए चुना गया। मुख्यमंत्री योगी ने मुझे सुबह मिलने बुलाया और तत्कालीन यूपीडा चेयरमैन अवनीश अवस्थी के साथ मुझे उत्पादन सेंटर की जमीन देखने को भेजा। उत्पादन सेंटर के लिए 200 एकड़ भूमि केवल तीन दिन में डीआरडीओ को 100 रुपये की लीज पर मिल गई। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 26 दिसंबर 2021 को 50वें विजय दिवस के अवसर पर लखनऊ में ब्रह्मोस-एनजी मिसाइल उत्पादन सेंटर का शिलान्यास किया था। भटगांव में ही पीटीसी इंडस्ट्रीज के स्ट्रेटेजिक मैटेरियल्स टेक्नोलाजी कांप्लेक्स में टाइटेनियम और सुपरअलाय मैटेरियल्स प्लांट डिफेंस कारिडोर के तहत तैयार किया गया है। इस प्लांट से भारत उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है जो लड़ाकू विमानों, मिसाइलों, नौसैनिक प्रणालियों और उपग्रहों में इस्तेमाल होने वाले कलपुर्जों का निर्माण कर सकते हैं।

पीटीसी इंडस्ट्रीज को एडवांस्ड मीडियम काम्बैट एयरक्राफ्ट कार्यक्रम के लिए टाइटेनियम रियर फिन रूट कास्टिंग के स्वदेशी विकास और निर्माण हेतु रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के अंतर्गत सेंटर फार मिलिट्री एयरवर्थनेस एंड सर्टिफिकेशन (सेमिलैक) से तकनीकी स्वीकृति पत्र भी मिल गया है। रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला और एयरोनाटिकल डेवलपमेंट एजेंसी के सहयोग से विकसित यह उपलब्धि अगली पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के लिए संरचनात्मक कास्टिंग के उत्पादन की भारत की स्वदेशी क्षमता में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है।